Dr. J. N. MISHRA
Assistant Professor
H. D. Jain college

तर्कसंग्रहः

प्रणेतारः = अन्नम्भट्टः

ग्रन्थ प्रकारः = न्याय वैशेषिक दर्शनस्य प्रकरण ग्रन्थः

मंगलाचरणः = निधाय हृदि विश्वेशं विधाय गुरुवन्दनम् ।
बालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः ॥

अर्थात् हृदय में विश्वनाथ को रखकर, गुरुवन्दना करके, बालकों के सुखपूर्वक बोध (अथवा मोक्षज्ञान) के लिए तर्कसंग्रह लिखा जाता है।

मंगलाचरण प्रकार = नमस्कारात्मक (भगवान विश्वेश) को नमस्कार

बालक = अर्थात् जिसने वेद, वेदाङ्ग, व्याकरण का अध्ययन कर लिया है तथा वह न्याय-वैशेषिक का ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक है

तर्कसंग्रहः = तर्क्यन्ते प्रतिपाद्यन्ते इति तर्का द्रव्यादिसप्तपदार्थाः तेषां संग्रहः = संक्षेपेण स्वरूपकथनं क्रियते इत्यर्थः।

सप्तपदार्थाः = द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः

सात पदार्थ = (1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव

नवद्रव्याणि = तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव

नव द्रव्य = (1) पृथिवी (2) जल (3) तेज (4) वायु (5) आकाश (6) काल (7) दिक् (8) आत्मा (9) मन

चतुर्विंशतिगुणाः = रूपरसगन्धस्पर्शसंख्यापरिमाणपृथक्त्वसंयोग-विभागपरत्वापरत्वगुरुत्वद्रव्यत्वस्नेहशब्दबुद्धिसुखदुःखेच्छा-द्वेषप्रयत्नधर्माधर्मसंस्कारश्चतुर्विंशतिगुणाः

24 गुण = (1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (6) परिमाण (7) पृथक्त्व (8) संयोग (9) विभाग (10) परत्व (11) अपरत्व (12) गुरुत्व (13) द्रव्यत्व (14) स्नेह (15) शब्द (16) बुद्धि (17) सुख (18) दुःख (19) इच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार

Scanned with OKEN Scanner

पञ्च कर्माणि = उत्क्षेपणावक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

पाँच कर्म = (1) उत्क्षेपण (ऊपर फेंकना) (2) अवक्षेपण (नीचे फेंकना) (3) आकुञ्चन (समेटना) (4) प्रसारण (फैलाना) (5) गमन (चलना) ये पांच कर्म है।

सामान्यम = परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम

सामान्य = पर और अपर दो प्रकार का सामान्य है।

विशेष = नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।

विशेष = नित्य द्रव्यों में रहने वाले विशेष तो अनन्त ही है।

समवाय = समवायस्त्वेक एव

समवाय तो एक ही है।

अभाव = अभावश्चतुर्विधः - प्रागभावः प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्योन्याभावश्चेति

अभाव चार प्रकार का है (1) प्रागभाव (2) प्रध्वंसाभाव (3) अत्यन्ताभाव (4) अन्योन्याभाव

Scanned with OKEN Scanner